



अनुक्रमणिका

मार्ग कहाँ है?

हर मनुष्य प्रसन्नता की तलाश में है, परन्तु इस का मार्ग कहाँ है?

नास्तिकता का मार्ग या आस्तिकता का?

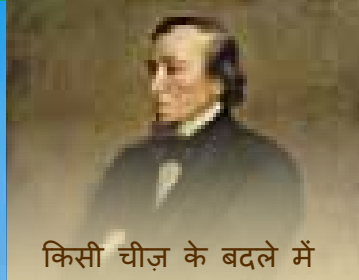
सदा यह प्रश्न उत्तरों पर आधारित होते हैं।

तो फिर उत्तर कैसे प्राप्त हो?
वह सबूत क्या-क्या हैं?
ईश्वर के देवत्व होने के सबूत

मार्ग कहाँ है?

मार्ग कहाँ है?

हर मनुष्य प्रसन्नता की तलाश में है, परन्तु इस का मार्ग कहाँ है?

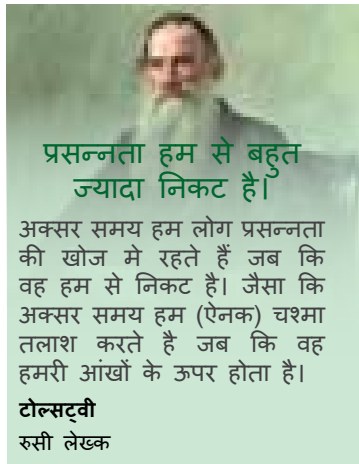


किसी चीज़ के बदले में प्रसन्नता

यह संभावना है कि आपने कोई ऐसा कार्य करें जो आपके लिए प्रसन्नता का कारण न बने। लेकिन प्रसन्नता कोई ऐसी विषय नहीं जो कुछ किये बिनाही आपको प्राप्त हो जाय।

बिंजामिन डिज़ाइली

पूर्व ब्रिटिश प्रधान मंत्री



प्रसन्नता हम से बहुत ज्यादा निकट है।

अक्सर समय हम लोग प्रसन्नता की खोज में रहते हैं जब कि वह हम से निकट है। जैसा कि अक्सर समय हम (एनक) चश्मा तलाश करते हैं जब कि वह हमरी आंखों के ऊपर होता है।

टोल्स्टोय

रूसी लेखक

तो यह प्रश्न भी गम्भीरता अपना लेते हैं, और जब तक वह अपने मन में पैदा होनेवाले इस प्रश्न का उत्तर न दें, उस समय तक उसको प्रसन्नता नहीं मिलती है। इन प्रश्नों में से कुछ प्रश्न यह हैं

- इस ब्रह्माण्ड का मालिक कौन है, और कौन इसमें अभिनय करता है?
- किसने मेरी सृष्टि की है, और किसने मेरे आस पास के ब्रह्माण्ड की सृष्टि की है?
- मैं कौन हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, मेरी सृष्टि क्यों की गयी है, और परिणाम क्या होनेवाला है?

जब मनुष्य को अपने जीवन के बारों में अधिक जागरुकता प्राप्त हो गयी, तो उसकी बुद्धि, सोंच और जीवन पर इन प्रश्नों का दबाव बड़ने लगा। और मनुष्य को शांति और प्रसन्नता उसी समय मिल सकती है जब वह ऐसा उत्तर पा ले जिससे मन को सुख मिलता हो



मार्ग अनेक है और ईश्वर एक है

जब आप को ज्ञान ना हो कि आप कहाँ जा रहे है, तो सारे मार्ग आपको उसी ओर ले जयेंगे।

लूईस कारोल

गणितज्ञ

नास्तिकता का मार्ग या आस्तिकता का?

पिछले प्रश्नों का उत्तर साधारण रूप से लोग दो विधि से देते हैं। नास्तिकता की विधि जिसमें यह विश्वास होता है कि कोई ईश्वर ही नहीं और यह ब्रह्माण्ड एक सामग्री है। और दूसरी विधि में यह विश्वास होता है कि हर चीज़ का प्रजापति ईश्वर है, इस विश्वास के कारण बहुत से प्रश्न उठते हैं, जिनमें से कुछ यह है

क्या यह संभव है कि दुर्घटना से होनेवाले कुछ सहभाग्य के फल के रूप में अचयनित रूप से इस ब्रह्माण्ड का स्वयं ही निर्माण हो गया?

और क्या यह समझ आने वाली बात है कि स्वयं होनेवाली यह दुर्घटना इस नियमित ब्रह्माण्ड के निर्माण का कारण हो?

जब से मनुष्य की सृष्टि हुई है उस समय से पूरे इतिहास में जिन ऊँचाइयों तक मनुष्य पहुँचा है, यह सब विकास के रूप में हुआ है या केवल एक दुर्घटना है? और हम केवल वायु में उड़नेवाले पंख के समान है जिसको दुर्घटना और अनियमवान पलटना रहता है?



अपनी दिशा निर्धारण करले।

निश्चय रूप से संसार उस मानव के लिए मार्ग खोल देता है जिसको यह ज्ञान हो कि वह कहाँ जा रहा है।

रालफ वामर्सॉन
अमेरिकी दार्शनिक

क्या मनुष्य ही विधायक ईश्वर है, वही सृजनकर्ता प्रजापति है, वही सब कुछ है, और उससे हटकर कोई चीज़ नहीं है?

प्रकृति से हटकर सारे अदृश्य क्या केवल मृगतृष्णा ही हैं जो नास्तिकता की लहरों और समग्र विश्व के आगे छुप जाता है?

क्या मनुष्य केवल एक सामग्री है जिसका कोई हिसाब नहीं है, या मनुष्य असल में बंदर था जिसका चलते समय के साथ विकास होता गया?

और कैसे यह संभव है कि एक बहरा गूँगा मूल ऐसे मनुष्य की सृष्टि करे जिसमें उच्च गुण, आदर्श व्यक्तित्व और बेहतरीन रूप में शारीरिक अंगों कि स्थापना हो? और कैसे यह संभव है कि जो विषय स्वयं अपने पास ही ना हो, वही विषय वह किसी और को दे?

दुनिया ही क्या मनुष्य का लक्ष्य है, और उसकी इच्छाओं का अंत है, और ईश्वरीय धर्मों में उपलब्ध उन बातों का कोई हिसाब नहीं है, जिसमें यह कहा गया है कि मनुष्य के अलावा

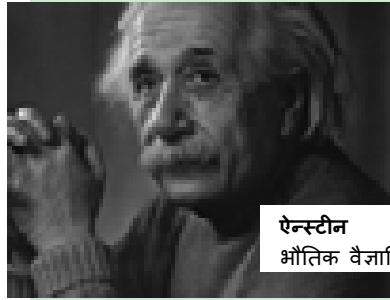
भी दुसरी बहुत सी ताकते हैं, या इस जीवन के अलावा भी दूसरा जीवन है?

इस प्रकार के लोगों के विचार के बारे में ईश्वर ने कहा। और कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी तो सिर्फ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें तो ज़माना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नहीं, सिर्फ अटकल से काम लेते हैं।

(अल जासीया, 24)

ईश्वर के होने का इन्कार करनेवालों के बारे में ईश्वर ने यह कहा और बे-इंसाफी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।

(अल नम्ल, 14)



एन्स्टीन
भौतिक वैज्ञानिक

ज्ञान और धर्म

मैं नही समझता हूँ के ज्ञान का धर्म के साथ कोई टकजराऊ है। वास्तव में मेरी भवना है कि इन दोनों के बीच मजबूत सम्बंध है। इसलिये मैं ये कहता हूँ, के ज्ञान धर्म के बिना अंधा है। ये दोनों महत्वपूर्ण हैं। ये दोनों एक साथ कार्य करते हैं। मेरी भावना है के जिस मनुष्य को ज्ञान की ये सच्छई।



न्यूटन
ब्रिटिश दार्शनिक

नास्तिकता मुखता का एक रूप है

नास्तिकता मुखता का एक रूप है। क्यों कि जब मैं सूर्य मंडल कि ओर देखता हूँ तो मुझे यह लगता है कि पृथ्वी सूर्य से उचित दूरी पर है, और यही दूरी पृथ्वी को इस प्रकार सक्षम बनाया कि वह गर्मी और रोशनी की सही शशी प्राप्त करे। निश्चय रूप से यह कोई संयोगवश नहीं है।

में हो) लोग इन से निराश हो जाते हैं?

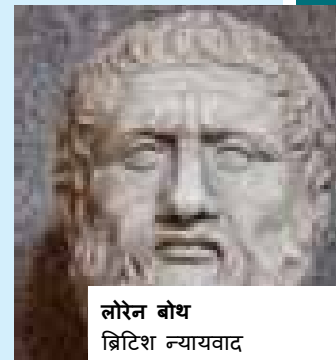
और भले काम और बुरे काम करने वाले के बीच अंतर करना कैसे संभव है? बल्कि पापी को उसके पाप से कौन-सी चीज़ रोकेगी? धनी के मन में निर्धनी पर दया करने का भाव कौन-सी चीज़ पैदा करेगी? और कौन सी चीज़ चोर, धोखेबाज़, द्रोही, व्यस्नी को रोकेगी... इन जैसे लोगों को अपनी इच्छाएँ पूरी करने से कौन-सी चीज़ रोकेगी?

नास्तिक समाज अपने आप में गुमराही, स्वार्थी, स्वयं इच्छाओं के प्रेम और इस जैसी दूसरी चीज़ों के बीच भेड़ियों के झुंड की तरह जीवन बिता रहे हैं, इसी कारण नास्तिकता अप्रसन्नता, निर्धनता, व्देष, चिंता और दुःख के वृद्धि का सब

अवश्य रूप से नास्तिकता का विश्वास रखने वाला कोई भी प्राणी (छोटा हो या बड़ा) जीवन के रहस्य का ज्ञान पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं करता क्यों कि वह अपने आप को मज़बूत समझता है, इसी प्रकार से वह यह मानता है कि जब किसी की आत्मा गले तक पहुँच जाये तो वह लोग इसको दुबारा लौटा नहीं सकते। तो फिर कहाँ है वह मूल जिसके अनुसार यह लोग कहते हैं वही इस ब्रह्माण्ड के वजूद का कारण है? और जब मनुष्य का शरीर एक बेकार विषय हो गया तो क्यों नहीं यह लोग उसकी आत्मा को लौटाने के लिए उस मूल के आगे विनती करते हैं?

फिर कैसे सारी मानवता धार्मिकता को इस हद तक सम्मान देने पर सहमत होती, अगर नास्तिक लोगों के अनुसार यह बात सही होती कि धार्मिकता केवल कल्पनाएँ है? क्यों इतिहास में अल्लाह के सारे नबी सफल रहे और उनकी कही हुयी बातें लोगों के मन में जीवित रही, जब कि किसी भी मनुष्य के विचार खतम हो जाते हैं और भुला दिये जाते हैं, बल्कि चलते समय के साथ (चाहे उनके विचार कितने ही अच्छी भाषा

सुन्दरता और प्रणाली



लारेन बोथ
ब्रिटिश न्यायवाद

निश्चित रूप से यह संसार सुन्दरता और प्रणाली कि निशानी है, और असंभव है कि इस संसार कि इतेफाख से सृष्टि हुई हो, परन्तु यह एक बुद्धिमान कि निर्माण किया हुआ है जिसने भलाई की आशा की है और हर विषय को अपनी बुद्धिमता और इरादे से व्यवस्थित की है।



वास्तविक प्रसन्नता

मैं अब वास्तव में जीरही हूँ। न कि उन उपभोक्त विषयों में जिसमें कि आजकल हम जी रहे हैं जैसे-नशीली पदार्थ, काम की उपेक्षा और भौतिकवाद संसार के पीछे इस खयाल से भागना की यही चीज़े हमारे लिए सौभाग्य का कारण हैं। लेकिन अब मैं एक प्रसन्नता, प्रेम, आशा और शांती से जीवन जी रही हूँ।

लोरेन बोथ

ब्रिटिश न्यायवाद

से बड़ा कारण है।

ईश्वर ने कहा और जो मेरी नसीहत से मुँह फेरेगा उसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और क्रियामत को हम उसे अंधा करके उठाएंगे। (ताहा, 124)

नास्तिकता एक ग़लत विचार है, जिसको न बुद्धि न तर्क और न स्वभाव स्वीकार करता है। यह ज्ञान के बिलकूल विरुद्ध है, इसी कारण ज्ञानी लोगों के बीच नास्तिकता को अस्वीकार किया गया है। इसी प्रकार से नास्तिकता तर्क के भी विरुद्ध है, क्योंकि इस की बुनियाद जीवन में तर्क न होने पर आधारित है, यह विचित्र ब्रह्माण्ड अनजानी दुर्घटना का फल है और इस में प्राकृति का कोई हस्त क्षेप नहीं है। जब कि नास्तिकता का दावा करने वाले लोगों के पास भी सच्चा स्वभाव धार्मिकता की ओर बुलाता है। बे इंसानों और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (अल नम्ल, 14)

सदा यह प्रश्न उत्तरों पर आधारित होते हैं।

मनुष्य का यह प्रयत्न व्यर्थ होगा कि वह इन प्रश्नों के उत्तर स्वयं जानने का प्रयास करें। आधुनिक विज्ञान किसी को इन प्रश्नों के उत्तर अब तक नहीं दे सका, इसलिए कि यह सारी बातें धर्म के विभाग के भीतर आती हैं। इसी कारण विचार अनेक हो गये

और इन बातों के बारे में मिथकों और किंवदंतियाँ अलग-अलग हो गयी, और इस कारण मनुष्य की चिंता और भ्रम बढ़ गया।

यह संभव नहीं है कि ईश्वर की ओर से अमन-आस्ती, सुख और प्रसन्नता की ओर जाने वाले रास्ते की ज्ञानोदय के बिना मनुष्य

इन सारी बातों का सही और पर्याप्त उत्तर प्राप्त कर ले।

इन जैसे सारे मुद्दों और प्रश्नों का उत्तर केवल धर्म ही में उपलब्ध हो सकता है, इसलिए कि यह सब आध्यात्मिक मुद्दें हैं, और सही धर्म ही सच और दुरुस्त फैसला कर सकता है इसलिए कि ईश्वर की ओर से यही वह एक धर्म है जो नबी और रसूलों के पास भेजा गया। ईश्वर ने कहा कह दो कि खुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है। (अल बख़रा, 120)

ईश्वर ने कहा कह दो कि हिदायत तो खुदा ही की हिदायत है। (अल इम्वान, 73)

और इसी कारण मनुष्य के लिए यह अवश्य है कि वह सच्चे धर्म की खोज करें, उसको सीखें और उस पर विश्वास रखें, ताकि भ्रम दूर हो जाये, संदेह अंत हो जाये, सीधे, सुख और प्रसन्नता के रास्ते का ज्ञानोदय हो जाय।

तो फिर उत्तर कैसे प्राप्त हो?

ईश्वर ने कहा और हम ने इन्सान को मिट्टी के खुलासे से पैदा किया है। फिर उस को एक मज़बूत (और महफूज़) जगह में नुत्फ़ा बना कर रखा। फिर नुत्फ़े का लोथड़ा बनाया फिर लोथड़े की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्डियाँ बनायी, फिर हड्डियों पर गोशत (पोस्त) चढाया, फिर उस को नयी सूत में बना दिया, तो खुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बड़ा बरकत वाला है फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। फिर क्रियामत के दिन उठा खड़े। किये। जाओगे। (अल मुमीनून, 12-16)

मालूम यह हुआ कि अंत में दुबारा ज़िंदा किया जाना और ईश्वर की तरफ लौटना है, और यह ब्रह्माण्ड व्यर्थ पैदा नहीं किया गया है, (ईश्वर व्यर्थ कामों से परेह है) बल्कि बड़ी बड़ी हिकमतों के कारण इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि की गयी है। ईश्वर ने कहा क्या तुम यह खयाल करते हो कि हमने तुम को बे-फायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ लौट कर नहीं आओगे। (अल मूमिनून, 115)



सौभाग्य को अपना लक्ष्य बनाओ

अगर तुम सौभाग्यवान बनना चाहते हो तो सौभाग्य को किसी लक्ष्य से जोड़ो नकी किसी व्यक्ति या किसी विषय से

ऐन्सटीन

भौतिक वैज्ञानिक



तो मालूम यह हुआ कि ईश्वर ने मानव और भूत प्रेत (जिन) की सृष्टि व्यर्थ नहीं की है, परन्तु एक ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए सृष्टि की है, जिसका कोई साथी नहीं है। यहाँ ईश्वर की प्रार्थना का मतलब आदेशों का पालन करना, नमाज़, ईश्वर कि बड़ाई करना, ब्रह्माण्ड का निर्माण करना और मानवता के लाभ के लिए प्रयत्न करना, और इस प्रकार के सारे काम जिसको ईश्वर पसंद करता है और जिससे खुश होता है वह सब काम प्रार्थना का मतलब है।

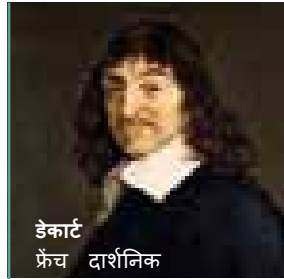
ईश्वर ने कहा। और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें। (अल ज़ारीयात, 56)

सारे लोग और सारी मानवता ईश्वर ही की ओर लौट कर जानेवाली है, और ईश्वर ही की ओर उनका अंतिम स्थान है।

ईश्वर ने कहा और खुदा ही की तरफ (तुम को) लौट कर जाना है। (आले इम्रान, 28)

यह विश्वास मानव के जीवन से व्यर्थता समाप्त करता है, उनको अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है, और उनके दिलों में प्रसन्नता पैदा करता है क्या ये किसी के पैदा किए बगैर ही पैदा हो गये हैं या ये खुद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? (नहीं) बल्कि ये यक्रीन ही नहीं रखते। (अल तूर 35-36)

निश्चित रूप से इस ब्रह्माण्ड के रहस्य के ज्ञान से जब मनुष्य असमर्थ हो जाता है, और ईश्वर की सृष्टि, धरती, तारे, ग्रह, दिन रात के अनुसरण, जीवन



डेकार्ट
फ्रेंच दार्शनिक

हर चीज का प्रजापति

मैं सजीव हूँ किसने मुझे वुजूद में लाया? और किसने मुझे पैदा किया? वास्तव रूप से मैंने अपने आप को पैदा नहीं किया, मुझे पैदा करने के लिए एक प्रजापति का होना अवश्य है। इस प्रजापति का सदैव जीवित रहनेवाला और किसी पर आधार न हो जो उसको "वजूद" में लाये या उसके वजूद की सुरक्षा करें। यह भी अवश्य है कि वह प्रजापति सुन्दरता के सारे चरित्र से संपूर्ण हो, और वह प्रजापति "अल्लाह" है जिसने हर विशय की सृष्टि की है

और मृत्यु, और इस ब्रह्माण्ड में ईश्वर की ओर से सृष्टि की हुयी सारी चीज़ों में विचार करता है तो वह स्वयं यह विश्वास कर लेता है कि इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि करने वाला कोई तो है जो उससे ज्यादा शक्तिमान है, और जो इस लायक

है कि उसकी विनती की जाय, उसकी प्रार्थना की जाय उससे पुण्य की आशा रखी जाय और उसके दण्ड से डरा जाय। इसी प्रकार से इन सारी बातों के बारे में सोच विचार मनुष्य को एक शक्तिमान और बुद्धिमान प्रजापति के वजूद को स्वीकार करने पर मजबूत करता है और यह विश्वास दिलाता है कि मूल ईश्वर के जीव से एक प्राणी है, जिसका वजूद पहले कुछ न था।

यह शक्तिमान, बुद्धिमान ईश्वर जिसने प्राणी के सामने अपना परिचय किया, और अपनी निशानियों को प्राणी के लिए गवाह और सबूत के रूप में स्थापित किया, (जब कि ईश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है) और ईश्वर ने अपने आप को बेहतर गुणों से विवरण किया, इस ईश्वर के वजूद, देवत्व और खुदाई पर दिव्य धर्म मानसिक आवश्यकता और जन्मजात वृत्ति गवाह है, और सारे समाज इसी पर सहमत है।

संतोषजनक उत्तर

सामान्य रूप से धर्म की ओर विषय रूप से एकेश्वरवाद का इतिहास हमें यह ज्ञान प्रदान करता है कि ब्रह्माण्ड और मानव की वास्तविकता और इन दोनों के वजूद में आने के कारण से संबंधित हर प्रश्न का संतोषजनक उत्तर एक ईश्वर पर विश्वास करना है, परंतु ये असंभव है मानवीय जीवन का लक्ष्य ईश्वर के सिवा कोई और ही। मानव में हर किस्म की धर्मिकता का उद्देश्य (जाने या अज्ञान में) एक ईश्वर पर विश्वास रखना है।



पोप फ्रैंसिस
आष्ट्रिया आर्क बिशप
का अध्यक्ष



वह सबूत क्या-क्या हैं?

1. हमारी आँखों के सामने ईश्वर का बनाया हुआ यह ब्रह्माण्ड और इसमें उपलब्ध ईश्वर की अजीब अजीब कारीगरी।

- क्या आप इस महान ब्रह्माण्ड को और इसमें मौजूद आकाश और पृथ्वी को नहीं देखते?
- क्या आपने कभी आकाश की सृष्टि और उसमें उपलब्ध तारे और ग्रहों के बारे में विचार किया?
- क्या आपने इस पृथ्वी इस में बहनेवाली नहरों, समुद्रों और इसमें मौजूद मैदानों और पहाड़ों के बारे में कभी विचार नहीं किया?
- क्या आपको यह मज़बूत समन्वय और अच्छी रचनात्मकता ने आश्चर्य नहीं किया?

आपके विचार में किसने इस ब्रह्माण्ड को पैदा किया? किसने इसकी रचनात्मकता की किसने इसको शक्तिमान बनाया, और किसने इस चमत्कारी रूप में इसकी सजावट की इस प्रकार से कि वह सुंदरता का चिह्न हो गया? और किसने किसी पूर्व उद्धारण के बिना इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि की है?

क्या आप यह ख्याल करते हैं कि स्वयं उसने ही अपने आप की सृष्टि की है? यह इस ब्रह्माण्ड का कोई शक्तिमान प्रजापति भी है? ईश्वर ने कहा। बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने जाने में अकलवालों के लिए निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में गौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मखलूक) को बे-फ़ायदा नहीं पैदा किया। तू पाक है, तो (क्रियामत के दिन) हमें दोज़ख के आज़ाब से बचाइये। (आल इम्रान, 190-191)

क्या कभी तुम्हारे मन में अपने आप की सृष्टि के बारे में ख्याल पैदा नहीं हुआ? ईश्वर ने कहा और खुद तुम्हारे नफ़सों में, तो क्या तुम देखते नहीं? (अल ज़ारीयात, 21)



निस्संदेह ईश्वर है।

जब आप गहराई में जाकर सोंच विचार करोगे तो निश्चित रूप से साशी ज्ञान आप को ईश्वर के वजूद का विश्वास करने पर मजबूर करेगा।

लार्ड केल्वी

स्काटलैंडका भौतिक वैज्ञानिक

तो फिर मानव की सृष्टि कैसे हुयी? ईश्वर ने कहा क्या ये किसी के पैदा किए बगैर ही पैदा हो गये हैं या ये खुद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं? या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? (नहीं) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते। (अल तूर, 35-36)

लोगों ने न खुद अपने आप की सृष्टि की है, और न इन्होंने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है, इन सब बातों से हटकर जब यह खुद “न” से पैदा नहीं हुए हैं, तो ब्रह्माण्ड और इसमें स्थिर सारी चीज़ों की सृष्टि करने वाले के होने में कोई संदेह नहीं है, और वह सृष्टि करनेवाला अल्लाह है। इतने सारे संकेत और सबूत के बाद इस ब्रह्माण्ड का नखशा बनानेवाले प्रजापति ईश्वर के वजूद का इंकार करने वालों पर आश्चर्य है।

2. वृत्ति

निश्चित रूप से प्राणी प्रजापति ईश्वर को मानने पर बिना किसी संदेह के जन्म जात से सहमत है, जैसा कि प्राणी जन्म जात से अच्छाई से प्रेम और बुराई से व्देष करने पर सहमत है, बल्कि ईश्वर के वजूद को मानना वृत्ति के अनुसार सारी चीज़ों से अधिक गहरा विश्वास है, जिसके लिए किसी गवाह या सबूत की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर ने कहा तो तुम एक तरफ़ होकर दीन (खुदा के रास्ते पर) सीधा मुँह किए चले जाओ (और) खुदा कि फितरत को, जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है, (अखितयार किए रहो) खुदा की बनायी हुई फितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते हैं। (अल रूम, 30)

और नबी ने कहा हर बच्चा वृत्ती ही पर पैदा होता है। (इस हदीस पर “बुखारी” और “मुस्लिम” सहमत है)

व्यक्तित्व की भावना

वह ईश्वर जिसके वजूद को हम मानते हैं, वह भौतिकवाद संसार से संबंध नहीं है, और न हमारी सिमित ज्ञानेद्रीय उस ईश्वर को महसूस कर सकती हैं। इसीकारण यह विफल प्रयत्न है कि ईश्वर के वजूद के प्रमाण के लिए प्राकृतिक ज्ञान का प्रयोग किया जाय, इसलिए कि ईश्वर के वजूद कि सीमा प्राकृतिक ज्ञान की तंग सीमा से अलग है। निश्चित रूप से ईश्वर के वजूद पर विश्वास करना एक निजी व्यवहार है जो मानव के अंतःकरण व भावनाओं में जन्म लेती है और निजी अनुभवों में बढ़ती है।



रोबर्ट मोरेस बिग
प्रकृतिवादी

3. सारी मानवता की आम सहमती

प्राचीन काल से ही सारी मानवता इस बात पर सहमत है कि इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि ईश्वर द्वारा हुयी है। परन्तु यहाँ पर बिना किसी साथी, बिना किसी भागीदार एक ईश्वर के इस ब्रह्माण्ड कि सृष्टि करने वाले होने पर बलिष्ठ सहमती है, अवश्य रूप से किसी भी जाति के लोगों ने यह दावा नहीं किया कि आकाश और पृथ्वी का, प्रजापति या अन्नदाता एक ईश्वर के अलावा कोई और है, बल्कि जब उनसे यह प्रश्न किया जाता है तो वे (ईश्वर के भागीदार होने का विश्वास रखते हुए) एक ईश्वर की देवत्व को मानते हैं, ईश्वर ने कहा और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चाँद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के तबेअ किया तो कह देंगे, खुदा ने, तो फिर ये कहा उल्टे जा रहे हैं? खुदा ही अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक खुदा हर चीज़ को जानता है। अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मारने के बाद (किस ने) जिंदा किया. तो कह देंगे कि खुदा ने। कह दो कि खुदा का शुक्र है. लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (अल अनकबूत, 61-63)

और ईश्वर ने यह भी कहा और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है, तो कह देंगे कि उन को गालिब (और) इल्मवाले (खुदा) ने पैदा किया हैं। (अल ज़ख़ूफ, 9)

नास्तिकता और ईश्वर के वजूद का इंकार (जैसा कि पहले इस का खंडन कर दिया गया) केवल यह कुछ ही लोगों की रुचि है। इस प्रकार की रुचि रखनेवाले बुद्धिमान लोगों के समूह से पीछे रह गये, और निजी जीवन में इस रुचि की असफलता और नाकामी सामने आगयी।



अल्लाह पर ईमान लाना मानवीय तत्व है।

बच्चों के अंदर बढ़नेवाला ज्ञान प्राकृतिक रूप से प्रजापति और ईश्वर की ओर ध्यान दिलाता है। ना कि उस विकास की तरफ जो मानवीय ज्ञान के लिए असामान्य और मुश्किल बूझ है।

जास्टोन बारेट

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का मानवीय सैध्दातिक

4. मानसिक आवश्यकता

ईश्वर के वजूद और उसके देवत्व होने पर पूर्वगामी सबूतों के अलावा बुद्धि इस बात पर सब से बड़ा सबूत है कि ब्रह्माण्ड की यह बलिष्ठ रचनात्मकता स्वयं अपने आप ही नहीं हुयी है परन्तु वह एक प्राणी है, जिसको एक दिन खतम होना है, और इस बात में कोई संदेह नहीं कि किसी प्राणी के अंत होने में कोई इसका अंत करनेवाला ज़रूर है।

अब यहाँ एक प्रश्न स्वयं यह होता है कि कितनी कठिनायें या कष्ट आप पर आये, तो आपने किसकी ओर आश्रय लिया? और किसके सामने आपने प्रार्थना की? और किससे आपने यह आशा रखी कि वह आपके नष्ट को खतम करें, आपके कष्ट को दूर करे, और आपकी परेशानी सुझाये?

ईश्वर ने कहा। और जब इन्सान को तकलीफ पहुँचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उसके तरफ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उसको अपनी तरफ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उसको पुकारता है उसे भूल जाता है और खुदा का शरीक बनाने लगता है ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कहे दो कि (ऐं काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोड़ा-सा फ़ायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़खियों में होगा) (अल ज़ूम, 8)



बुद्धिमान बनो

क्या कोई बुद्धिमान यह कल्पना करता है या यह विश्वास रखता है कि बुद्धि और बुद्धिमत्ता से खाली एक शक्तती नै उसे अपने-आप संयोग से सृष्टि की है?

जान क्लैव नाई को थरान

डोल्न विश्वविद्यालय का प्राकृतिक विज्ञान का प्राध्यापक



धर्म और दर्शन

बहुत से कम दर्शन ऐसे हैं जो मानव को निस्तकता के निकट लाता है। लेकिन दर्शन की गहराई मनुष्य को धर्म की ओर लाती है।

फ्रांसिस बिकोन

ब्रिटिश दार्शनिक

ईश्वर ने कहा। वही तो है जो तुम को जंगल और दरिया में चलने-फिरने और सैर करने की तौफ़ीक देता है, यहाँ तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियों पाकीज़ा हवा (के नर्म-नर्म झोंके) से सवारों को लेकर कर चलने लगती है और वे उनसे खुश होते हैं, तो यकायकी जन्नाते की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वे ख्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गए, तो उस वक्त खालिस खुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ माँगने लगते हैं कि (ऐ खुदा!) अगर तू हम को इससे निजात बख़्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हो। (यूनूस, 22-23)

ईश्वर ने कहा। और जब उन पर (दरिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती है, तो खुदा को पुकारने (और) खालिस उस की इबादत करने लगते हैं, फिर जब वह उन को निजात दे कर खुशकी पर पहुँचा देता है, तो कुछ ही इंसाफ पर कायम रहते हैं और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते हैं, जो वायदा तोड़नेवाले (और) ना-शुक्रे हैं) (लुखमान, 32)

ईश्वर के देवत्व होने के सबूत

जब अच्छी वृत्ति और श्रेष्ठ बुद्धि यह मान चुके हैं कि इस ब्रह्माण्ड का एक ईश्वर है, और इस प्रकृति का एक प्रजापति है, तो इस ईश्वर के देवत्व होने पर सब के सब सहमत हो गये, और उस एक ईश्वर के देवता होने का स्वीकार कर लिये। यह श्रेष्ठ बुद्धि खुल्लम खुल्ला यह वर्णन करती है कि ईश्वर अपनी देवत्व में एक है, इसमें इसका न कोई साथी है और न कोई भागीदार इसकी बहुत सी खुली खुली निशानियाँ (सबूत) हैं। इनमें से कुछ यह हैं

1. इस ब्रह्माण्ड के लिए दो ईश्वर कैसे हो सकते हैं?

एक ईश्वर का वजूद मानने के अलावा बुद्धि के सामने कोई विकल्प नहीं है, वरना वद्वदात्मक अधिरोपण के अनुसार अगर दो ईश्वर होते, तो यह प्रश्न ज़रूर होता कि जब यह दोनों ईश्वर आपस में झगड़ने लगें, और उन दोनों में से हर एक अपनी इच्छा पूरी करना चाहे तो क्या होगा? इन दोनों में से एक किसी काम के करने का निर्णय ले, और दूसरा इसके विरुद्ध निर्णय ले? और अवश्य रूप से इन दोनों में से एक अग्र होगा, तो दूसरा विनम्र ही रहेगा और क्या विनम्र ईश्वर हो सकता है? तो यह फैसला अटल होगा कि ईश्वर एक है। ईश्वर ने कहा। खुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता है तो हर माबूद अपनी-अपनी मखलूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर गालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (खुदा के बारे में) बयान करते हैं, खुदा उस से पाक है। वह पोशीदा और ज़ाहिर को

जानता है और (मुश्रिक) जो उसके साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है। (अल मूमीनून, 91-92)



अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है

इसाईल और फादेह का बादशाह सेना का ईश्वर यही कहता है मैं ही प्रथम हूँ, मैं ही अंतिम हूँ, और मेरे अलावा कोई ईश्वर नहीं है ईशइया (6.44)

अहदे खदीम (तौरात)



हर्शल

ब्रिटिश दर्शनिक और खगोलवादी

ईश्वर

का एकत्व

जैसे-जैसे विज्ञान का क्षेत्र व्याप्त होता गया इस बात का प्रमाण मज़बूत और अधिक हो गया कि एक पूर्ण शक्तिमान बहिर्दमता का वजूद है। भौगोलिक, गणितज्ञ, भौतिक वैज्ञानी, और पर्यावरण वैज्ञानिक अपने प्रयास और खोजों से प्रजापति की सदा को उँचा करने के लिए सारे ज्ञान का एक प्रार्थना स्थल स्थापित कर रहे हैं।

2. बड़े आश्चर्य की बात है कि मनुष्य किसी ऐसे कमज़ोर कि प्रार्थना करे, जिसके पास न कोई शक्ति है और न कोई ताकत, न उसके हाथ में आकाश और पृथ्वी का शासन है, न वह कोई छोटी सी छोटी चीज़ कि सृष्टि करता है, और दूसरों के अलावा स्वयं वह अपने लिए न लाभ और नष्ट का, और न जीवन, मृत्यु और मृत्यु के बाद दुबारा जीवित करने का मालिक है। ईश्वर ने कहा वह (खुदा-ए-अज्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है जिस ने अपने बन्दे पर कुरआन नाज़िल फरमाया ताकि दुनिया वालों को हिदायत करे। वही कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिसने (किसी को) बेटा नहीं बनाया और जिसका बादशाही में कोई शरीक नहीं और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठहराया। और (लोगों ने) उसके सिवा और माबूद बना लिए हैं, जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और खुद पैदा किए गये हैं और न अपने नुकसान और नफ़ा का कुछ अख्तियार रखते हैं और न मरना उन के अख्तियार में है और जीना और न (मर कर) उठ खड़े होना। (अल फूरखान, 1-3)

मुषरिकों के अनुसार अगर एक ईश्वर के साथ कोई दूसरे ईश्वर भी होते जिनकी प्रार्थना की जाती और जिन के पास सिफारिश की जाती, तो ज़रूर यह दूसरे ईश्वर भी उसी एक ईश्वर की प्रार्थना करते, उसी की बिनती करते, और उसी की ओर साधना करते। ईश्वर ने कहा कह दो कि अगर खुदा के साथ और माबूद होते, जैसा कि ये कहते हैं, तो वे ज़रूर (खुदा-ए-मालिके अर्श की तरफ़ (लडने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालते। वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (इसका रुत्बा) बहुत उँचा हैं। (अल इसा, 42-43)

बल्कि अल्लाह एक और उसको किसी की आवश्यकता नहीं है, न उसका कोई बेटा है और न वह

किसी का बेटा, और न कोई उसके समान है।

यह सब ईश्वर न किसी चीज़ के मालिक है और न वह कुछ कर सकते हैं। ईश्वर ने कहा कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा (माबूद) ख्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानों और ज़मीन में ज़रा भर चीज़ के भी मालिक नहीं हैं और न उन में उन की शिकत हैं और न उन में से कोई खुदा का मददगार है, और खुदा के यहाँ (किसी के लिए) सिफारिश फ़ायदा न देगी। मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बख़शे। (सबा, 22-23)

यानी एक ईश्वर के अलावा लाभ और नष्ट न देनेवाले प्राणियों को ईश्वर का भागीदार मानने वालों से उनकी कमज़ोरी और उनकी प्रार्थना के ग़लत होने का वर्णन करते हुए यह कह दो कि अगर तुम्हारी प्रार्थनाएँ तुम्हारे लिए लाभ का कारण हो, तो तुम ईश्वर के साथ जिस किसी को भागीदार समझते हो उससे प्रार्थना कर लो। जब कि इन के कमज़ोर होने और किसी भी प्रकार से प्रार्थनाएँ पूरी न करने के कारण बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं, क्योंकि इनके हाथ में न्यूनतम राज्य नहीं है, और ये पृथ्वी और आकाश में कण कण के न खुद मालिक है और न इसमें भागीदार हैं। और ये तुम्हारे मन घड़त ईश्वरों की आकाश और पृथ्वी में न थोड़ी भागीदारी है न अधिक, न उनके हाथ में पूरा राज्य है और न इस राज्य में भागीदारी। अब यह बात रह जाती है कि कोई कहे “हो सकता है कि यह लोग ईश्वर के मददगार और मंत्री हो परन्तु इन से प्रार्थना करना लाभ का कारण हो, इसलिए कि (ईश्वर को इनकी आवश्यकता होने के कारण) यह लोग भी अपने चाहने वालों की ज़रूरते पूरी करते हैं। लेकिन ईश्वर ने इस बात का भी इन्कार किया, और कहा। “आर उसके लिए नहीं है” यानी एक शक्तिमान ईश्वर के लिए नहीं है “इन लोगों में से” यानी इन (मनघड़त) ईश्वरों में से “कोई मददगार” यानी कोई मंत्री या मददगार नहीं है जो ईश्वर की सहायता करे और उसके राज्य के उपाय में उसकी मदद करे।

3. इस ब्रह्माण्ड में और इस चमत्कार रचनात्मकता के नियमित रूप से एक ही शैली से चलने में इस बात का बड़ा

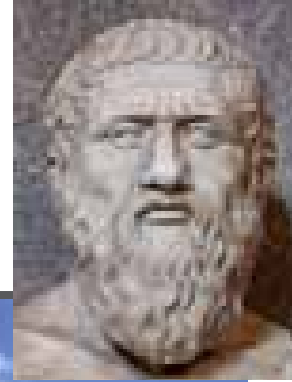


सबूत है कि यह ब्रह्माण्ड एक ही बुद्धिमान और शक्तिमान ईश्वर के उपाय का फल है। ईश्वर ने कहा और (लोगों)! तुम्हारा माबूद खुदा-ए-वाहिद है। उस बड़े मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। बेशक आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आनो-जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों) में जो दरिया में लोगों के फायदों की चीज़े लेकर रवां हैं और मेंह में जिसको खुद आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद ज़िंदा (यानी खुशक हुए पीछे सर सब्ज़) कर देता है और ज़मीन पर हर किस्म के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान फिरे रहते हैं अक्लमंदों के लिए (खुदा की खुदरत की) निशानियाँ हैं। (अल बखारा, 163-164)

क्या यह नियमित संसार और प्रणाली, जो दिन रात अपना काम कर रहे हैं, और जिसमें एक क्षण के लिए भी कोई रुकावट नहीं होती है जिससे कि संसार का विनाश हो जाय, तो क्या इस नियमित संसार पर एक ईश्वर के सिवा कोई और कंट्रोल रख सकता है? क्या सृष्टी और उपाय करने में इस रचनात्मकता का एक ईश्वर नहीं है, जिसका न कोई विरोधी है और न कोई भागीदार? क्या यह सब बातें हर बुद्धि रखनेवाले के लिए इस बात का खुला सबूत नहीं है कि दो ईश्वर का वजूद असंभव है? ईश्वर ने कहा अगर आसमान और ज़मीन में खुदा के सिवा और माबूद होते तो ज़मीन व आसमान फ़साद से भर जाते। जो बातें ये लोग बताते हैं, अर्थ का मालिक, खुदा उन से पाक है। (अल अंबीया, 22)

ऊँचा लक्ष्य

यह जगत कुछ इस रूप में हमारे सामने आता है कि जिसमें कोई चीज़ संयोग से नहीं हुई। बल्कि जगत का प्रत्येक अंश एक लक्ष्य की ओर दौड़ रहा है। और वह लक्ष्य अपने से बड़े लक्ष्य की ओर दौड़ रहा है। इसी प्रकार अंतिम लक्ष्य प्राप्त होता है।



अफ़उलातून
युनानी दर्शनिक

यानी अगर आकाश और पृथ्वी में एक ईश्वर के अलावा और कई ईश्वर होते, तो इन दोनों में और इनमें स्थिर सारे जीवों का विनाश हो जाता। निश्चित रूप से यह संसार नियमित और एकरूपता की अंतिम हद है, जिसमें न कोई दोष है न कोई बुराई, और जिसमें न किसी के बीच अनिच्छा और विपक्ष का सवाल है, निश्चित रूप से यह सब इस बात का सबूत है इस संसार का योजनाबद्ध एक है, इसका ईश्वर एक है, और इसका भगवान एक है। अगर इस संसार के लिए दो योजना बद्ध और दो या अधिक ईश्वर होते, तो ज़रूर इसके प्रणाली में बिगाड़ पैदा होता, और इसके आधार टूट जाते, क्योंकि यह दोनों या तो एक दूसरे को मना करते, या एक दूसरे का विरोध करते, और जब इनमें से कोई एक किसी विषय की योजना का निर्णय ले, और दूसरा उसी विषय की योजना न करने का निर्णय ले। और इन दोनों की योजना का एक साथ निर्माण होना असंभव है, इसी प्रकार से इन दोनों में से किसी एक की योजना का निर्माण होना दूसरे के कमज़ोर होने और विनम्र होने का सबूत है। सारी योजनाओं में दोनों का एक ही निर्णय लेना भी असंभव है। तो फिर यह बात अटल होगी कि वह सर्व शक्तिमान जिसका न कोई अनिच्छुक है और न कोई विरोधी, जो अपने निर्णय के प्रकार योजना करनेवाला है, वह एक ईश्वर है जो सर्व शक्तिमान है।

4. नबी आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद (जो सब पवित्र मन, बुद्धिमत्ता, सत्यवादी और ईश्वर के आदेश लोगों तक पहुँचाने में विश्वसनीय हैं) ये सारे नबी और रसूल इस बात पर सहमत हैं कि ईश्वर एक है और उसके अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। ईश्वर ने कहा। और जो पैगम्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वहय भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो। (अल अंबीया, 25)



अहदे खदीम (तौरात)

ईश्वर एक हैं

ईश्वर वह भगवान है जिसके सिवा कोई दूसरा नहीं है (तरनीया 4-34) मैं ईश्वर हूँ, कोई दूसरा ईश्वर नहीं, और मेरे सिवा कोई भागवान नहीं (अशईया 45-5)

और ईश्वर ने नबी नूह के बारे में कहा। हमने नूह को उन की क्रौम की तरफ भेजा, तो उन्होंने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो। खुदा की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (अल आराफ़, 59)

ईश्वर ने नबी ईसा के बारे में कहा। वे लोग बे-शुबहा काफिर हैं, जो कहते हैं कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह खुदा हैं, हालांकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल! खुदा की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शख्स खुदा के साथ शिर्क करेगा, खुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उसका ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (अल मायीदा, 72)

ईश्वर ने नबी मुहम्मद (स) को यह कहने का आदेश दिया कि कहदो कि मुझ पर (खुदा की तरफ से) यह वहय आती है कि तुम सब का माबूद एक खुदा है, तो तुम को चाहिए कि फरमांबरदार हो जाओ। (अल अब्बोया, 108)

परन्तु श्रेष्ठ बुद्धि रखने वालों के लिए यह मुनासिब है कि वह अपने नबियों का अनुसरण करें, ईश्वर को एक मानें और उसी पर प्रभु और देवता होने का विश्वास रखें, ताकि जीवन और भविष्य जीवन में प्रसन्नता प्राप्त हो। ईश्वर ने कहा। जो शख्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (आखिरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (अल नहल, 97)

विश्वास (ईमान) के साथ किये जाने वाले अच्छे कार्य का फल इस पृथ्वी में प्रसन्न जीवन है। इस का यह हरगिस मतलब नहीं कि यह जीवन ऐश्वर्य होगा, हो सकता है कभी ऐसा हो, और हो सकता है कभी प्रसन्न जीवन हो, लेकिन मालो-दौलत न हो। जीवन में माल दौलत के अलावा और भी बहुत सी चीज़ें हैं जिससे जीवन प्रसन्न होता है। जीवन में ईश्वर

भगवान एक हैं

तुम अपने भगवान को ही सज्दा करते हो और केवल उसी की पूजा करते ही (मत्ता 4-10) लूखा 4-8), यही हमेशा रहनेवाला जीवन है कि लोग आपको जाने, आपही निश्चित रूप से भगवान हैं और वह ईसा मसी जिसको आपने भेजा है (योहन्न 17-3)

अहदे जदीद (बैबल)



सौभाग्य का मार्ग

मुझे कभी सौभाग्य का ज्ञान नहीं था। जबसे मैं खुरान पढ़ना आरंभ किया तो मैं अपने आप से सवाल करने लगा और विस्मय करने लगा कि क्यों लोग इस संसार में गुमराह हो रहे हैं। जब कि प्रमाण उनके सामने हैं और प्रकाश उनके पास है।

कास्तिफेन्स
ब्रिटिश गायक

से प्रेम, उस पर विश्वास उसकी सुरक्षा, और उसके संतोष से सुखी रहना है। इसी प्रकार से जीवन में स्वस्थ, सुख, संतोष, लक्ष्मी, घरेलू आराम और लोगों का प्रेम है। जीवन में भले कार्य से संतोष और उसका प्रभाव आत्मा और जीवन में होना है। और माल-दौलत केवल जीवन की सुंदरता का एक तत्व है। माल और बेटे तो दुनिया की जिंदगी की (रौनक व) ज़ीनत है और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे सवाब। के लिहाज़ से तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं।

(अल कहफ़, 46)

जब ईश्वर के पास स्थित महान, शुध्द और अमर लक्ष्य से मन का लगाव हो जाता है, तो प्रसन्न जीवन और प्रसन्नता का मतलब ही कुछ और हो जाता है।

अगर मनुष्य केवल विरोधी करना चाहे, तो स्वयं उसने ही अपने लिए अप्रसन्नता और कष्ट के रास्ते बना लिया है जिसमें वह लगातार घूमता ही रहेगा, ऐसे कष्ट और दुःखों से वह पीड़ित होगा जिसके दर्द से दिल टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा। ईश्वर ने कहा। तो जिस शख्स को खुदा चाहता है कि

हिदायत बखशे उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। (अल अनाम, 125)

जो मनुष्य एक ईश्वर को मानेगा, उसका कोई भागीदार न जानेगा, तो उसके लिए सुख-चैन और राहत है। और जो मनुष्य इस रास्ते से भटक जाता है, तो उसका मन दुख, रंज और ग़म से पीड़ित रहता है (ईश्वर हमें इस से दूर रखे) यह उदाहरण है उस मनुष्य का जो ईमान लाये और एक ईश्वर (अल्लाह) को माने, और उस मनुष्य का जो ईश्वर का भागीदार किसी को माने और सीधे रास्ते से भटक जाये। ईश्वर ने इसका एक दूसरा उदाहरण दिया, कहा कि

खुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शख्स है, जिस में कई (आदमी) शरीक है, (अलग-अलग मिजाज और बुरी आदतों वाले और एक आदमी खास एक शख्स का (गुलाम है।) भला दोनों की हालत बराबर है? (नहीं) अल्हम्दुलिल्लाह! बल्कि यह अक्सर लोग नहीं जानते। (अल ज़ूम, 29)

ईश्वर का भागीदार मानने वाले मनुष्य का उदाहरण उस व्यक्ति के अनुसार है, जिसको कुछ बुरे चरित्र और भयंकर व्यक्तित्व वाले लोग घेर लिये हों, और वे आपस में इस मनुष्य के बारे में झगड़ रहे हों। एक उससे कह रहा हो मेरे पास आ, दूसरा उससे कह रहा हो बैठ जा, और तीसरा कह रहा हो खड़े हो जा। ऐसा मनुष्य अपनी यह समस्या लेकर परेशान रहेगा, न उसको शारीरिक सुख है और न मानसिक राहत। एक ईश्वर को मानने वाले का उदाहरण उस व्यक्ति के अनुसार है जो अपने आप को सौंप दे, यानी एक ही व्यक्ति का होकर रह जाये, जिसके आदेश और अनादेश एक ही होंगे, तो क्या ऐसे दो मनुष्य एक ही समान हो सकते हैं? ईश्वर की प्रशंसा है, उसी के लिए सारी अच्छी तारीफें हैं और उसी का बड़ा शुक्र है कि वही एक ईश्वर और एक प्रभु है, उसके सिवा न कोई दूसरा ईश्वर है और न कोई प्रभु। जो लोग इस सत्य से अज्ञानी हैं वे आंतरिक संघर्ष की समस्या में जीवन बिता रहे हैं, और उनके साथ दुख, परेशानी, मुसीबत दुविधा और आत्महत्या की समस्याएँ लगी हुयी हैं।

आत्महत्या और धर्म

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दो निपुण डॉ गोस मानवे और शोध विद्यार्थिनी (अलेसांद्रा) अल्लगजांडा फलोशमान ने आत्महत्या और धर्म के दरमियान के संबंध को जानने का प्रयास किया। इस प्रयास का प्रतिफल संयुक्त राष्ट्र के विश्वसनीय हवाले के अनुसार ये रहा A global perspective in theepidemiology of suicide



धर्म के अनुसार (हर एक तरह पर) आत्महत्या के दर

